

नाम है तेरा तारणहार...

परमात्मा का नाम स्मरण करने से -

- » उनके गुणों के अभिमुख अत्यन्त भक्तिसभर, जितना अधिक चित्त होता है, तदनुरूप वही गुणों की प्राप्ति में बाधक बननेवाले कर्म नाश हो जाते हैं।
- » नामस्मरण के समय गुणों के प्रति राग के अनुकूल निर्जरा एवं पुण्यानुबंधी पुण्य की प्राप्ति होती है।
- » नामस्मरण के काल में जितना अधिक सूक्ष्मबोध, अर्थबोध होता है एवं परमार्थ प्राप्ति के लिए अप्रमादभाव जितना अतिशय होता है, उतना संसार परिभ्रमण सीमित होता है।
- » नामस्मरण के समय परमात्मा के गुणों में प्रवर्तित उपयोग अगर अत्यधिक सूक्ष्म हो तो तीर्थकर बनने योग्य तीर्थकर नामकर्म के बंध का कारण भी होता है।
- » वीतरागता का स्पर्श हो और उसके अनुरूप अप्रमत्तभाव प्रकर्षवाला हो तो क्षपकश्रेणी की प्राप्ति होती है।
- » नामस्मरण के द्वारा अवीतरागभाव से संचित अनादिकालीन सर्व कर्मों का क्षय करके जीव वीतराग सर्वज्ञ बन जाता है।
- » एकाग्रतापूर्वक परमात्मा का नामस्मरण करने से साधक परमात्मा के उपयोगवाला बनता है, इस एकरूपता को समाप्ति कहते हैं, जो सर्व इष्टसिद्ध करने में समर्थ है।

आधार : ललितविस्तरा ग्रन्थ

